Volume: 2 Issue: 8 Pages: 95-99

स्वतंत्रता सेनानी एवं एक आदर्श सांसद: रेशमलाल जांगड़े

*[1] प्रोफेसर प्यारेलाल आदिले

*[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, जे.बी.डी.कला एवं विज्ञान महाविद्यालय कटघोरा, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 29/July/2023
Accepted: 31/Aug/2023

***Corresponding Author**
प्रोफेसर प्यारेलाल आदिले
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,
जे.बी.डी.कला एवं विज्ञान महाविद्यालय कटघोरा,
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

"बन गए जो छत्तीसगढ़ के कर्मठ, अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक, नेता थे सदा आत्म स्वाभिमानी।" उक्त पंक्ति के परिचायक स्वतंत्रता सेनानी रेशमलाल जांगड़े छत्तीसगढ़ में जिला बलौदाबाजार के गांव परसाडीह में 15 फरवरी सन 1925 को जन्म लिए। देश के प्रथम सांसद श्री रेशमलाल जांगड़े सही मायने में स्वतंत्रता सेनानी एवं कर्मठ सांसद ने भारत के नक्शे में जन्म ग्राम को राष्ट्रीय पहचान दिलाया। आप छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर से स्नातक के उपरांत विधि महाविद्यालय नागपुर से सन 1949 में विधि स्नातक की। 12 अगस्त 1942 को आपको गिरफ्तार कर 15 दिन तक जेल में रखा गया। नाबालिक होने के कारण पूर्व के आंदोलनों में आपको गिरफ्तार नहीं किया गया। आप सांसद एवं विधायक भी बने। आपकी अनेक उपलब्धियां हैं। सन 1939 तक सतनामी आश्रम रामजी बाड़ा फाफाडीह के लिए दान एकत्रित किए। सन 1956 से 1968 तक छत्तीसगढ़ भातृ संघ के उपाध्यक्ष रहे,और स्वर्गीय खूबचंद बघेल के नेतृत्व में संगठनात्मक कार्य किए। महाकौशल सतनामी नवयुवक संघ के संस्थापक सदस्य थे।आप सतनामी समाज में न्याय,समता एवं विकास कार्य के लिए सामाजिक संगठन के माध्यम से अनेकों रचनात्मक कार्य किए। 1989 में विश्व प्रसिद्ध सतनाम धाम गिरौदपुरी में जलाशय निर्माण में आपका विशेष सहयोग रहा। 1991 में सतनाम मेला समिति के अध्यक्ष मनोनित हुए। आपने छात्र जीवन से मृत्युपर्यंत छुआछुत,गौ हत्या प्रतिबंध,महिला सशक्तिकरण, शिक्षा एवं सामाजिक सद्भाव के लिए अनवरत कार्य किया। आप फौजदारी मामले के प्रसिद्ध अधिवक्ता थे। विभिन्न न्यायालयों में आपने निर्धनों को नि:शुल्क कानूनी सहायता प्रदान किया करते थे। संसद के 60 वीं वर्षगांठ पर देश के प्रथम सांसद के रूप में तत्कालीन राष्ट्रपति,प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति,लोकसभा अध्यक्ष व दोनों सदनों के द्वारा 13 मई 2012 को आपको आदर्श सांसद का सम्मान मिला। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आपको दलित चेतना के लिए "गुरु घासीदास सम्मान"वर्ष 2005-06 में प्रदान किया गया। 11 अगस्त 2014 को रायपुर के एक निजी अस्पताल में आपने अपना स्थूल शरीर परित्याग किया और परि निर्वाण को प्राप्त किए। सच मायने में आप एक लोकप्रिय जन नेता और आदर्श सांसद थे।

मुख्य शब्द: स्वतंत्रतासेनानी, आदर्श, स्वाभिमानी,आंदोलन,अस्पृश्यता, सशक्तिकरण,समता।

1. शोध सारांश

"बन गए जो छत्तीसगढ़ के कर्मठ, अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक, नेता थे सदा आत्म स्वाभिमानी।" उक्त पंक्ति के परिचायक स्वतंत्रता सेनानी रेशमलाल जांगड़े मातृ प्रदेश मध्यप्रदेश से 2000 को नवगठित छत्तीसगढ़ में वर्तमान जिला बलौदाबाजार के गांव परसाडीह में 15 फरवरी सन 1925 को जन्म लिए। देश के प्रथम सांसद श्री रेशमलाल जांगड़े जी सच मायने में स्वतंत्रता सेनानी एवं एक कर्मठ सांसद के रूप में भारत के नक्शे में जन्म ग्राम को राष्ट्रीय पहचान दिलायी। आपकी शिक्षा छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर से स्नातक के उपरांत विधि महाविद्यालय नागपुर से सन 1949 में विधि स्नातक तक थी। 12 अगस्त 1942 को आपको गिरफ्तार कर 15 दिनों के लिए जेल भेजा गया। नाबालिक होने के कारण पूर्व के आंदोलनों में आपको गिरफ्तार नहीं किया गया। आप राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न पदों पर विराजित रहे। आप सांसद एवं विधायक भी बने। आपकी अनेक उपलब्धियां हैं। सन 1939 तक सतनामी आश्रम रामजी बाड़ा फाफाडीह के लिए दान एकत्रित किए। सन 1956 से 1968 तक छत्तीसगढ़ भातृ संघ के उपाध्यक्ष रहे, और स्वर्गीय खूबचंद बघेल के नेतृत्व में संगठनात्मक कार्य किए। महाकौशल सतनामी नवयुवक संघ के संस्थापक सदस्य थे।आप सतनामी समाज में न्याय, समता एवं विकास कार्य के लिए सामाजिक संगठन के माध्यम से अनेकों रचनात्मक कार्य किए। सन 1989 में विश्व प्रसिद्ध गुरु घासीदास कर्म स्थली गिरौदपुरी में जलाशय निर्माण में आपने विशेष सहयोग प्रदान किया। 1991 में गुरु घासीदास मेला समिति के अध्यक्ष मनोनित हुए। रेशमलाल जांगड़े ने छात्र जीवन से मृत्युपर्यंत छुआछुत, गौ हत्या प्रतिबंध, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा एवं सामाजिक सद्भाव के लिए अनवरत कार्य करते रहे। आप फौजदारी मामले के प्रसिद्ध अधिवक्ता थे। विभिन्न न्यायालयों में आपने निर्धनों को नि:शुल्क कानूनी सहायता प्रदान किया करते थे। संसद के 60 वीं वर्षगांठ पर देश के प्रथम सांसद के रूप में तत्कालीन राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष व दोनों सदनों के द्वारा 13 मई 2012 को आपको आदर्श सांसद के रूप में सम्मानित किया गया। छत्तीसगढ़ सरकार

द्वारा आपको दलित चेतना के लिए "गुरु घासीदास सम्मान" वर्ष 2005-06 में प्रदान किया गया। 11 अगस्त 2014 को रायपुर के एक निजी अस्पताल में आपने अपना स्थूल शरीर परित्याग किया और परि निर्वाण को प्राप्त किए। सच मायने में आप एक लोकप्रिय जन नेता और आदर्श सांसद थे।

2. प्रस्तावना -

'अपनापन छलके जिसकी बातों में।
कुछ ही लोग होते हैं लाखों में।'

इस पंक्ति को चरितार्थ करने वाले एक महान देशभक्त, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं अमूल्य सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में स्वर्गीय श्री रेशमलाल जांगड़े छत्तीसगढ़ प्रांत के बलौदा बाजार जिले के परसाडीह ग्राम में 15 फरवरी सन 1925 को जन्म लिए। आप एक स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ सांसद, विधायक, दलित पिछड़ों के महान सेवक, मृदुभाषी, अधिवक्ता, एक युग पुरोधा के रूप में समाज के कुशल वक्ता-प्रवक्ता और कर्मठ कार्यकर्ता थे। स्वर्गीय रेशमलाल जांगड़े राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक दृष्टि से अत्यंत साफ-सुथरी छवि के थे। आप सदैव खादी पोशाक धारण करते थे। खादी की धोती और कुर्ता आपका एकमात्र वेशभूषा था।आपकी स्मरण शक्ति इतनी प्रबल थी कि जो भी कहते उसे आप कभी भूलते नहीं और जिनसे भी आप मिलते थे उनको दोबारा मिलने पर सरलता से पहचान लेते थे। आप एक प्रसिद्ध पदयात्री भी थे। पैदल चलना आपके स्वभाव में था।आप एक जननायक, साधारण जनों के बीच रहने वाले, रहन-सहन, खानपान की दृष्टि से अत्यंत सादगी, अक्सर जमीन पर चादर बिछाकर सो जाने वाले हरफनमौला मस्त व्यक्तित्व के धनी थे। जब भी आपसे कोई मिलते बहुत ही सरल ढंग से मिला करते थे। एक बार जब मैंने शासकीय महाविद्यालय कसडोल में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्य करते हुए महाविद्यालय से वापस घर की ओर आ रहा था तब रास्ते में आपका काफिला मिला और आप तुरंत मुझे देखते ही अपनी गाड़ी रुकवा कर मुझसे कहा- 'प्रोफेसर साहब चलिए एक रात्रि कालीन बैठक में। उन्होंने अपने साथ मुझे ग्राम खैरा के रात्रि कालीन बैठक की अध्यक्षता कराया और सामाजिक दिशा निर्देशन के लिए वक्तव्य देने का अवसर दिया।' जब मैंने उनसे कहा कि आप इतनी तकलीफ क्यों उठाते हैं? तब उन्होंने कहा- "ना संघर्ष ना तकलीफ तो क्या मजा है जीने में। बड़े-बड़े तूफान थम जाते हैं जब आग लगी हो सीने में।"
जब मैं उनको कहा कि आपके कार्यों से लोग आपसे जलते होंगे। तब उन्होंने फिर मुझसे कहा-

"नफरत नहीं हम प्रेम के आदी हैं। हमें गर्व है कि हम मानवतावादी हैं।"

आपने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। 12 अगस्त 1942 को आपको गिरफ्तार कर 15 दिनों के लिए जेल भेजा गया। नाबालिक होने के कारण पूर्व के आंदोलनों में आपको गिरफ्तार नहीं किया गया। सन् 1939 से 1942 तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य रहे। सन् 1946 से आप कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में कार्य किए तथा प्रथम एवं द्वितीय आम चुनाव में 1952 से 1962 तक आप सांसद रहे। सन् 1962 से 1967 तक मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य एवं उप मंत्री बने। सन 1972 से 1977 तक आप स्वतंत्र विधायक रहे। सन् 1985 से 1990 तक भारतीय जनता पार्टी से मध्य प्रदेश में विधायक बने। भारतीय जनता पार्टी से ही 1989 से 1991 में बिलासपुर क्षेत्र से लोकसभा सदस्य बने। आपकी अनेक उपलब्धियां हैं। सन 1939 तक सतनामी आश्रम रामजी बाड़ा फाफाडीह के लिए दान एकत्रित किए। सन 1956 से 1968 तक छत्तीसगढ़ भातृसंघ के उपाध्यक्ष रहे, और स्वर्गीय खूबचंद बघेल जी के नेतृत्व में संगठनात्मक कार्य किए। हर परिस्थिति में आप समाज के हित के लिए कार्य करते रहे। जगदीश चंद्र बसु के पंक्ति -"जीवन के दु:ख से घबराकर, अपने मन को क्यों मुरझाएं। धूप-छांव तो प्रतिपल, प्रतिक्षण, आओ हम केवल मुस्कुराएं।" [1] को आपने अपने जीवन में चरितार्थ किया। उनकी जीवन में अरविंद घोष का निम्न कथन लागू होता है-"हमारा वास्तविक शत्रु कोई बाहरी शक्ति नहीं वरन हमारी अपनी शिथिलता और कायरता है। राजनीति की आराम कुर्सी पर बैठकर विदेशी सत्ता नहीं हिलायी जा सकती। एक पराधीन राष्ट्र बलिदान का मार्ग अपनाकर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है।" [2] इस प्रकार से हम देखें तो यह स्पष्ट होता है कि-"भारतीय राजनीतिक समाज में उपनिवेशिक दासता की चुनौती ने संघर्ष के अथक प्रयासों को आरंभ किया, जो आजादी की संपूर्णता पर ही शांत हो सका।" [3] जब रेशमलाल जांगड़े जी से संवाद करते थे तो वे कहा करते थे कि हमारे भारतीय सिपाही जिन बातों को लेकर लड़ रहे हैं वह अत्यंत सारगर्भित है। जैसा कि इतिहासकार लैकी स्वीकार करते हैं -"भारतीय सिपाहियों ने जिन बातों के कारण विद्रोह किया, उनसे अधिक जबरदस्त बातें कभी किसी विद्रोह को जायज करार देने के लिए हो ही नहीं सकती।" [4] 'सौ सोनार के त एक लोहार के' उक्ति को रेशमलाल जांगड़े जी अपने जीवन में लोगों को उपदेश देते हुए सीखाते थे। जैसा कि रसूल हमजातोव ने लिखा है-"अगर तुम अतीत पर पिस्तौल से गोली चला ओगे तो भविष्य तुम पर तोप से गोले बरसाएगा। साफ है कि कोई भी रास्ता अपने इतिहास को विस्मृत कर तरक्की की सीढ़ियां नहीं चढ़ सकता। बेहतर भविष्य का निर्माण इतिहास की शानदार स्मृतियों को नई पीढ़ी तक ले जाने से ही हो सकता है।" [5] और इसलिए रेशमलाल जांगड़े जैसे स्वतंत्रता सेनानी और आदर्श सांसद के जीवन वृत्त को भावी समाज के लिए प्रेरक बनाया जाना चाहिए।

3. शोध उद्देश्य -

किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए उस शोध के पीछे के उद्देश्य को स्पष्ट रुप में समझना चाहिए क्योंकि सामाजिक शोध, सामाजिक वास्तविकता से संबंधित होता है। समाज में विशेष तौर पर समाहित समस्याओं के समाधान एवं उनसे संबंधित तथ्यों को उजागर करना शोध का उद्देश्य होता है। शोध के उद्देश्य एवं तथ्यों की खोज प्राचीन तथ्यों की नवीन ढंग से विवेचना करते हुए वर्तमान सिद्धांत की उपयुक्तता एवं परीक्षण का कार्य संभव किया जाता है। प्रस्तुत शोध 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं एक आदर्श सांसद: रेशमलाल जांगड़े' विषय पर शोधार्थी द्वारा निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं -

1. स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना।
2. रेशमलाल जांगड़े के कार्यों का मूल्यांकन करना।
3. रेशमलाल जांगड़े द्वारा स्वाधीनता आंदोलन में किए गए सक्रिय भूमिका का अध्ययन करना।
4. रेशमलाल जांगडे के शैक्षिक जीवन काल का अध्ययन करना।
5. रेशमलाल जांगड़े द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों का अध्ययन करना।
6. रेशमलाल जांगड़े के विशेष सामाजिक अवदान को स्पष्ट करना।
7. रेशमलाल जांगड़े के द्वारा किए गए कार्यों को भावी समाज के लिए प्रेरक सिद्ध करना।
8. रेशमलाल जांगड़े द्वारा किए गए सामाजिक, आर्थिक, कानूनी, राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक कार्यों को उद्घाटित करना।

4. जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि -

लॉर्ड बैकन के कथन-"अधिक दरिद्रता और आर्थिक असंतोष क्रांति को जन्म देता है।" [6] विचार के समर्थक श्री रेशमलाल जांगड़े का जन्म 15 फरवरी सन 1925 ईसवी को वर्तमान में बलौदाबाजार जिला के विकासखंड बिलाईगढ़ के एक छोटे से ग्राम परसाडीह में हुआ था। वे अपने पांच भाइयों में बड़े मंझला थे। वर्तमान में उनके छोटे भाई और पूर्व राज्यसभा सदस्य डॉ. भूषणलाल जांगड़े जी हैं। रेशमलाल जांगड़े जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला जांगड़े जी हैं। उनके दो पुत्र और बड़ी पुत्री अपने-अपने परिवारिक जीवन यापन कर रहे हैं। इनके पिता का

नाम श्री टीकाराम जांगड़े तथा माता का नाम श्रीमती गंगामती था। 1958 से इनके तीन पुत्र एवं दो पुत्री कमला जांगड़े के साथ हैं। इनके दादा जी का नाम माखनलाल जांगड़े था जो कि उस क्षेत्र के जाने-माने समाज सेवक एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। रेशमलाल जांगड़े को समाज सेवा विरासत में मिला था। इनका परिनिर्वाण 11 अगस्त 2014 में रायपुर जिले के निजी अस्पताल में हुआ।

5. शैक्षिक परिचय -

"अपना देश अपनी धरती, हमको जान से प्यारी है। अपना सिर कटाकर हमको, करनी इसकी रखवाली है।" [7] दीपमाला पांडेय के इस पंक्ति को चरितार्थ करने वाले रेशमलाल जांगड़े ने ने कक्षा पहली और दूसरी की पढ़ाई बिर्रा के पास ग्राम महुआडीह में सन 1932 से 1934 ईस्वी में पूरी की थी। सन 1935 और 1936 में कक्षा तीन और चौथी की शिक्षा बिलाईगढ़ के पास ग्राम नगरदा के स्कूल से प्राप्त की थी। इसके बाद कक्षा पांचवी से 11 वीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लारी (वर्तमान में सप्रे शाला) स्कूल रायपुर चले गए थे। सप्रे शाला से वे सन 1943 ईस्वी में 11 वीं पढ़कर निकले थे। श्री जांगड़े सन 1943 से 1947 तक इंटरमीडिएट और बी.ए. तक की शिक्षा छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर से प्राप्त की थी। सन 1947 से 1949 ईस्वी तक कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विधि महाविद्यालय विश्व विद्यालय नागपुर महाराष्ट्र चले गए थे। यहां से उन्होंने कानून में स्नातक तक की शिक्षा लेने के बाद पढ़ाई बंद कर दी थी।आप उच्च कोटि के समाजशास्त्री और कानूनविद थे।

6. अध्यब्यवसाय -

कवियत्री पार्वती कंवर की कविता-"भागे न वो मोड़ पर, बिना किसी मुसीबतों से डरकर। रख दी एक मिसाल वफा की, देश के खातिर लड़कर।" [8] को चरितार्थ करने वाले रेशमलाल जांगड़े जी जिला सेशन कोर्ट बिलासपुर में सफलतापूर्वक मुकदमों की पैरवी किया करते थे। निर्धन, पीड़ितों के मुकदमों की पैरवी के लिए नाम मात्र का फीस लेकर लड़ा करते थे। इससे उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली थी। वे ज्यादातर केस जीता करते थे। जिसके कारण उनकी लोकप्रियता बढ़ती चली गई थी। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ शासन में श्री रेशमलाल जांगड़े को 'गुरु घासीदास सामाजिक चेतना तथा दलित उत्थान पुरस्कार' प्रदान करने के लिए गठित जूरी (निर्णायक समिति) का सदस्य बनाया था। जबकि आप इस सम्मान को प्राप्त करने के प्रथम हकदार थे। श्री जांगड़े जी अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए चाटुकारों और चाटुकारिता से सदैव दूर रहते थे। यही कारण है कि स्वार्थी तत्वों ने बड़े स्तर की राजनीति से श्री जांगड़े जी को दूर रखते हुए हाशिए पर ढकेलते रहने का षड्यंत्र किया। ऐसी गतिविधियों से भी जांगड़े को काफी निराशा हुई थी और इसी कारण अपने जीवन के अंतिम दशकों में राजनीति की ओर से मुंह मोड़ते हुए वकालत की पेशे में ही गंभीर हो गए थे। सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना तथा दीन-हीन एवं गरीबों के लिए सहयोग का काम करना तथा सामाजिक बुराइयों के निराकरण में निरंतर सक्रिय रहना आपकी आदत बन गई थी।

7. सामाजिक कार्य एवं अवदान -

"उन पराक्रमी सूरों को जो, विजय इतिहास का एक, गौरवमयी अध्याय बन गए। अपनी वीरता से देश का नाम उज्जवल कर गए।" [9] इस पंक्ति को अपना ध्येय वाक्य मानने वाले श्री रेशमलाल जांगड़े ने अनेकों उल्लेखनीय सामाजिक कार्य किए। सन 1946 में जब शिवरीनारायण मांघ पूर्णिमा मेला के समय सतनाम धर्म के गुरु मुक्तावनदास गिरौदपुरी आए थे। इस अवसर पर एक सभा करके श्री रेशमलाल जांगड़े ने गुरुजी का सामाजिक सम्मान कराया था। इसी तरह सन 1967-68 में श्री कन्हैयालाल कोसरिया, नैनदास कुर्रे, जगतू महंत और अन्य समाज प्रमुखों ने मिलकर एक संयुक्त बैठक करके यह निर्णय लिया था कि प्रत्येक वर्ष गिरौदपुरी धाम में फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी से सप्तमी तक तीन दिवसीय गुरु घासीदास मेला आयोजित किया जाए। यह निर्णय स्थाई रूप से लागू हो गया और तब से लेकर आज तक उक्त तिथियों में प्रत्येक वर्ष 10, 12 हजार की संख्या से प्रारंभ हुआ गुरु दर्शन मेला आज लाखों की संख्या में पहुंच गया है। इसे एक बड़ी सामाजिक उपलब्धि के रूप में देखा गया। छत्तीसगढ़ प्रदेश बनने के बाद प्रथम मुख्यमंत्री श्री अजीत प्रमोद कुमार जोगी द्वारा घोषित और लिए गए निर्णय से गिरौदपुरी मेला परिसर में दिल्ली के कुतुबमीनार से भी ऊंचा विशाल गुरु घासीदास जय स्तंभ का निर्माण करा दिए जाने से अब गिरौदपुरी धाम विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल की श्रेणी में शुमार हो गया है। इस स्थल पर 1991 के दशक में श्री रेशमलाल जांगड़े ने जेल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए दो पहाड़ियों के बीच को बंधवाकर विशाल जलाशय का निर्माण करवाया था। इस समय मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा थे। एक ओर श्री रेशमलाल जांगड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बनकर देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी वहीं दूसरी और दलित, पिछड़ों के लिए इनके कल्याण हेतु सामाजिक संघर्ष को भी निरंतर जारी रखा। इसे ही दलित-पिछड़े समाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा गया। श्री रेशमलाल जांगड़े जब मध्यप्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के डायरेक्टर बने तब पहली बार गिरौदपुरी मेला के समय एक हफ्ते तक गिरौदपुरी तक यात्रियों को पहुंचाने के लिए चारों दिशाओं से बसें चलाई थी। सन 1973 से 1977 तक पद पर बने रहते हुए उन्होंने यह कार्य बखूबी किया था। इससे मेला में अपार भीड़ होने लगी थी जो आज भी कायम है। श्री रेशमलाल जांगड़े बिलासपुर से शिवरीनारायण होते हुए महानदी पार कर अपने गृह ग्राम परसाडीह आते-जाते थे। हर वर्ष शिवरीनारायण महानदी में रपटा (कच्चा पुल) बनने से पहले लगभग 5 माह नाव से ही आना-जाना करना पड़ता था। नाव ठेके पर चलाई जाती थी। ठेकेदार प्रतिदिन आने-जाने वाले यात्रियों से मनमाना शुल्क वसूला करते थे। श्री जांगड़े से लोगों ने शिकायत की। तब श्री रेशमलाल जांगड़े ने जनहित में शासन को पत्र लिखकर विधानसभा में प्रश्न करके सब दिन के लिए ठेकेदारी प्रथा बंद करवा दी थी और नाव शुल्क प्रति यात्री पांच पैसे निर्धारित करवा दिया था। जो 30 साल अर्थात महानदी सबरी पुल के बनने तक जारी रहा। श्री जांगड़े के इस पहल से रोज आने-जाने वाले लोगों में अपार खुशी दिखाई देती थी। इस प्रकार से देखा जाए तो श्री रेशमलाल जांगड़े एक आदर्श सांसद के रूप में समाज के बीच अन्याय के लिए सदैव सक्रिय रुप से लड़ा करते थे। दलित, शोषित, पिछड़ों को समान न्याय दिलाने के लिए अपने कानूनी कार्यवाही में सफल होते थे। श्री रेशमलाल जांगड़े अत्यंत मृदुभाषी, सरल, सहज और सादगी जीवन जीने वाले व्यक्तित्व थे। आप सामाजिक कार्यों में प्रातः से लेकर रात्रि तक व्यस्त रहते थे। इसलिए आपको समाज के लोग एक महापुरुष के रूप में स्वीकार करते थे। आप निरंतर रूप से सामाजिक समस्याओं को सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करते थे।

8. राजनीतिक गतिविधियां -

रेशम लाल जांगड़े जी छात्र जीवन से ही राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने लगे थे। वे स्वतंत्र भारत के शासन में 1949 को दिसंबर माह में अंतःकालीन सदस्य के रूप में संसद के सदस्य निर्वाचित हुए। इस कार्य में महंत लक्ष्मीनारायण दास की प्रमुख भूमिका रही। आप संविधान सभा के सदस्य थे। वर्ष 1952 में आप लोकसभा के प्रथम चुनाव संवैधानिक नियमों से जिसमें रेशमलाल जांगड़े जी बिलासपुर संसदीय क्षेत्र से चुनकर संसद पहुंचे तथा लगातार 1962 तक सांसद रहे। इस कार्यकाल में संसद के विभिन्न समितियों के सदस्य भी रहे। वर्ष 1962 से 1967 तक मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। इस समय आप मध्यप्रदेश शासन में उप मंत्री भी रहे। सन 1972 से सन 1977 तक मध्यप्रदेश विधानसभा के निर्दलीय सदस्य रहे। सन 1985-86 में विधानसभा के उपनेता प्रतिपक्ष भाजपा में रहे। सन 1972 से जनसंघ में शामिल हुए। सन् 1977 में जनता पार्टी के सदस्य बने। 1980 से भाजपा के सदस्य हुए। वर्ष 1985 में भारतीय जनता पार्टी के सुंदर लाल पटवा शासन में विधायक रहे। वर्ष 1989-1991 तक लोकसभा के सांसद बिलासपुर क्षेत्र से निर्वाचित हुए। आप संसद में डॉ.भीमराव अंबेडकर जी द्वारा प्रस्तुत 'हिंदू कोड बिल' वर्ष 1954-55

के बहस में भाग लिए। और शासकीय संकल्प द्वारा लोकसभा वर्ष 1954-55 में शासन से आश्वासन प्राप्त किया। भाजपा के पदाधिकारी के कार्य में आप मध्यप्रदेश से भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष तथा मध्य प्रदेश चुनाव समिति के सदस्य रहे। श्री रेशमलाल जांगड़े जी सामाजिक क्षेत्र में अनेकों कार्य किए। आप अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ के महामंत्री बने। तथा गुरु घासीदास महासमिति रायपुर के अध्यक्ष भी नियुक्त हुए। आप श्री खूबचंद बघेल जी के भातृसंघ में उपाध्यक्ष भी बने। आपने महाकौशल हरिजन शिक्षा समिति का संचालन भी किया। आप गिरौदपुरी धाम मेला आयोजन समिति के 1991 में अध्यक्ष बने। आपने अनेक पदों पर रहते हुए अपने राजनीतिक गतिविधियों को संपादित किया।

9. स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता -

बाल गंगाधर तिलक का वह कथन कि-"स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूंगा। हमारा उद्देश्य आत्मविश्वास है, भिक्षावृत्ति नहीं।" [10] कथन को अपने जीवन में लागू करने वाले श्री रेशमलाल जांगड़े ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। डब्ल्यू.एच.रसेल टाइम्स पत्र के संवाददाता के रूप में जब भारत आए थे तब उन्होंने लिखा कि-"गोरे लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, सभी लोग अपना शत्रु समझते थे।" [11] उनके इस कथन को श्री रेशम लाल जांगड़े दिल से लिए और सच मायने में अंग्रेजों के अत्याचार को सहन नहीं कर पाते थे। श्री रेशमलाल जांगड़े अपने पढ़ाई के दिनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर इसकी खेलकूद और बौद्धिक शाला के नियमित सदस्य के रूप में कार्य करने लगे थे। देश के विभिन्न गांधीवादी नेताओं ने 09 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। 12 अगस्त 1942 को रेशमलाल जांगड़े जी ने गांधी चौक रायपुर में भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े। मंच से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हिटलर एवं जर्मनी की तारीफ करते हुए शासन की घोर निंदा की और शहीद भगत सिंह व सुभाष चंद्र बोस की उत्तेजक भाषण देते हुए जिंदाबाद के नारे लगाए। उस समय के कमिश्नर जे.डी. केरा वाले व पुलिस अधिकारी श्री जांगड़े जी को सेंट्रल जेल रायपुर भेज दिए। सन 1942 ईस्वी में राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजों के खिलाफत में भारतीयों के द्वारा छेड़े गए इस 'भारत छोड़ो' आंदोलन के भागीदार बनने पर अंग्रेजो के द्वारा श्री जांगड़े को उनके अनेक साथियों के साथ पकड़कर जेल में बंद कर दिया गया था। 15 दिनों तक जेल में बंद रखने के बाद जेलयात्री की पदवी पाकर वे जेल से रिहा हुए थे। सन 1947 में 15 अगस्त को देश के आजाद होने के बाद 26 जनवरी सन 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। प्रथम आम चुनाव सन 1952 से पहले तक कि देश की सुचारू व्यवस्था के लिए अंतरिम सरकार का गठन किया गया था। श्री रेशमलाल जांगड़े प्रथम अंतरिम सरकार में संसद सदस्य बनाए गए थे।

10. अन्य उल्लेखनीय कार्य -

सन 1952 में लोकसभा के प्रथम आम चुनाव में जीत दर्ज करके श्री जांगड़े ने पहला काम अस्पृश्यता के विरुद्ध मुहिम चलाना शुरू कर दिया। इस हेतु उन्होंने सबसे पहले लोकसभा में अशासकीय संकल्प पेश किया। इससे समूचे दलित समाज में हलचल पैदा हो गई और श्री रेशमलाल जांगड़े की भूरी-भूरी प्रशंसा होने लगी। तत्पश्चात उन्होंने सन 1954 में बाबा साहब डॉ.भीमराव अंबेडकर जो कि कानून मंत्री भारत सरकार के द्वारा संसद में प्रस्तुत 'हिंदू कोड बिल' में अस्पृश्यता के खिलाफ मुहिम छेड़ने पर इसका जोरदार समर्थन किया। इसी समय श्री जांगड़े ने छुआछूत के खिलाफ लोकसभा में अपना लंबा भाषण प्रस्तुत किया। श्री जांगड़े के इस भाषण से संसद के सवर्ण प्रतिनिधियों में खलबली मच गई। श्री जांगड़े की यह मुहिम महात्मा गांधी के छुआछूत के विरुद्ध चलाए जा रहे उनके अनुयायियों के समर्थन में था। मध्यप्रदेश के उप मंत्री रहते हुए श्री जांगड़े ने क्षेत्रीय विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। शिवरीनारायण से गिरौदपुरी, भैंसा से भंडारपुरी तथा बनाहिल से अपने गृह ग्राम परसाडीह तक सड़क निर्माण का कार्य कराया। इसके बाद श्री कन्हैयालाल कोसरिया के साथ मिलकर रायपुर के आमानाका के करीब मध्यप्रदेश सरकार से बहत्तर हजार वर्गफीट जमीन प्राप्त किया जिस पर आगे चलकर गुरुघासीदास सेवा समिति के माध्यम से 'गुरु घासीदास प्लाजा' का निर्माण कराया गया। जहां वर्तमान में श्री जांगड़े की प्रतिमा स्थापित है। लगभग साढे तेरह वर्ष तक भारतीय संसद और लगभग 15 वर्षों तक मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य रहते हुए सैकड़ों जनहितकारी कार्य कराए। दलितों और पिछड़ों की अस्मिता की रक्षा तथा उनकी तरक्की के लिए जी-जान से संघर्ष किए। रेशमलाल जांगड़े जी दलित समाज के पहले नेता थे जिन्होंने दलितों के हित और विकास के लिए मध्यप्रदेश की विधानसभा और देश की लोकसभा में सर्वाधिक प्रश्न किए थे। इसका उल्लेख समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र में पी-एच.डी. शोध करने वाले छात्रों ने किया है। श्री रेशमलाल जांगड़े एक ओर समाज में व्याप्त छुआछूत के खिलाफत में काम किए तो वहीं दूसरी ओर समाज में समान न्याय एवं समतामूलक समाज रचना के लिए अतुलनीय कार्य किए हैं।

11. छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण में योगदान -

रेशमलाल जांगड़े जी न केवल एक राजनेता ही थे अपितु वे क्रांतिकारी पुरुष और विकास पुरुष के रूप में भी ख्याति प्राप्त थे। उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण में भी अपना अमूल्य योगदान दिया। स्वर्गीय खूबचंद बघेल जी से विचार-विमर्श के बाद एवं स्वर्गीय ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी से मंत्रणा के बाद 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग के गठन के बाद संसद में छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के लिए अपना पक्ष रखा। श्री रेशम लाल जांगड़े जी प्रारंभ से ही छत्तीसगढ़ के सही विकास के लिए छत्तीसगढ़ को एक राज्य की दर्जा दिलाने के हिमायती थे।

12. राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक सम्मान -

श्री रेशमलाल जांगड़े जी के द्वारा किए गए अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं समाजोत्थान के संबंधी कार्यों का आकलन करते हुए उन्हें अनेक सम्मान व पुरस्कार दिया गया। प्रमुख रूप से उन्हें संसद की 60 वीं वर्षगांठ पर देश के प्रथम सांसद के रूप में तत्कालीन राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति, और लोकसभा अध्यक्ष तथा दोनों सदनों द्वारा 13 मई 2012 को आदर्श सांसद का सम्मान दिया गया। छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा सन 2005-06 में उन्हें दलित चेतना के लिए 'गुरु घासीदास सम्मान' से नवाजा गया। श्री रेशम लाल जांगड़े विभिन्न सामाजिक संस्थाओं एवं समितियों द्वारा अभिनंदित व सम्मानित किए गए।

13. निष्कर्ष एवं सुझाव -

'अहंकार मत कीजिए, कर देगा बर्बाद । इसके संग जो भी रहा, हुआ नहीं आबाद। संत सयाने कह रहे, मानें हम यह बात। गुणी जनों की बात पर, करें ना वाद विवाद।' उक्त पंक्ति को अपने जीवन में आधार मानकर चलने वाले स्वतंत्रता सेनानी श्री रेशमलाल जांगड़े जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत अपने कुशल क्षमता और अपनी योग्यतम जीवन शैली के आधार पर समाज का अनवरत रूप से सेवा करते थे। वे राजनीति के क्षेत्र में उच्च पदों पर रहते हुए भी किसी भी प्रकार का घमंड न करते हुए सदैव समाज के उत्थान के लिए सामने आकर कार्य करते थे। श्री रेशमलाल जांगड़े जी द्वारा किए गए उपरोक्त कार्यों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि वह आधुनिक युग के एक महान समाज सुधारक और राजनेता थे। श्री रेशमलाल जांगड़े एक आदर्श सांसद के रूप में भी ख्याति प्राप्त किए। श्री रेशमलाल जांगड़े जी के द्वारा किए गए कार्यों एवं उनके द्वारा बताए गए मार्गों को भावी समाज के लिए प्रेरक बनाने हेतु निम्नांकित सुझाव प्रमुख हैं -

1. छत्तीसगढ़ के हरेक गांव में श्री रेशमलाल जांगड़े जी की प्रतिमा स्थापित किया जाए।
2. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के जीवन वृत्त से संबंधित साहित्य का सृजन किया जाना चाहिए।

3. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के कार्यों से संबंधित चलचित्र का निर्माण किया जाना चाहिए।
4. श्री रेशमलाल जांगड़े जी द्वारा किए गए कार्यों से संबंधित नुक्कड़ नाटक का मंचन किया जाना चाहिए।
5. श्री रेशमलाल जांगड़े जी द्वारा किए गए समाजिक कार्यों से संबंधित ग्रंथ की रचना की जानी चाहिए।
6. श्री रेशमलाल जांगड़े के नाम से प्रत्येक ग्राम पंचायत में वाचनालय का निर्माण किया जाना चाहिए।
7. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम से छत्तीसगढ़ के हरेक गांव में तालाब का निर्माण किया जाना चाहिए।
8. श्री रेशमलाल जांगड़े जी से संबंधित कार्यों को समाज के बीच प्रसारित किया जाना चाहिए।
9. श्री रेशमलाल जांगड़े के नाम से ब्लॉक स्तर पर विद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए।
10. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम पर जिला स्तर पर महाविद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए।
11. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम पर छत्तीसगढ़ मके राजधानी रायपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए।
12. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के जीवन से संबंधित चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया जाना चाहिए।
13. श्री रेशमलाल जांगड़े जी से संबंधित साहित्य का निर्माण कर विद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए।
14. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम से छत्तीसगढ़ में शोध पीठ की स्थापना की जानी चाहिए। 15, श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम पर सामाजिक सद्भाव पुरस्कार की स्थापना की जानी चाहिए।
15. श्री रेशमलाल जांगड़े जी को मरणोपरांत भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया जाना चाहिए।
16. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के परिवारों को समुचित सुविधा सरकार के द्वारा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
17. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम से छत्तीसगढ़ में सद्भावना ट्रेन चलाई जानी चाहिए।
18. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के नाम से छत्तीसगढ़ में विधायक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की जानी चाहिए।
19. श्री रेशमलाल जांगड़े जी के कार्यों को देश के अन्य प्रांतों में प्रसारित किया जाना चाहिए।

श्री रेशमलाल जांगड़े जी के सम्मान में लिखते हुए प्रो.आर. पी.टंडन ने कहा है कि -"प्रथम लोकसभा सदस्य और कर्मठ समाजसेवक सतलोकी श्री रेशम लाल जांगड़े जी भारत रत्न 2022 के असली हकदार हैं अतः उन्हें भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न 2022' के रूप में सम्मानित किया जाए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।" [12] अंत में मैं यही कहूंगा कि-"सतनाम धरम सतनामी के, हम गांव-गांव में लाएंगे। रेशमलाल के अमरवाणी को, जन-जन तक पहुंचायेंगे।"

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. भास्कर डी. के., संपादक, 'डिप्रेस्ड एक्सप्रेस', अंक-12, स्वामी प्रकाशन, कृष्णानगर, मथुरा, उत्तर प्रदेश, सत्र-2020 पृष्ठ संख्या-29.
2. जैन पुखराज, 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं राजनीति', साहित्य भवन आगरा, सत्र-1991, पृष्ठ संख्या-29.
3. नवीन कुमार, संपादक, '1857 के स्वतंत्रता के अविवेचित पक्ष', नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, सत्र-2022, प्राक्कथन खंड।
4. जैन पुखराज, 'स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास', एस.चंद कंपनी (प्रा.) लिमिटेड नई दिल्ली, सत्र-1988, पृष्ठ संख्या-19.
5. नवीन कुमार, संपादक, '1857 के स्वतंत्रता के अविवेचित पक्ष', नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, सत्र-2022, भूमिका खंड।
6. जैन पुखराज, 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं राजनीति', साहित्य भवन आगरा, सत्र-1991, पृष्ठ संख्या-31.
7. पांडेय आशा उमेश, 'साहित्य दर्पण', काव्य संकलन, साहित्य कलश पब्लिकेशन, पटियाला, पंजाब, सत्र-2021, पृष्ठ संख्या-27.
8. नाथ डॉ रंजना, प्रधान संपादक, 'पहल' वार्षिक पत्रिका, शासकीय महाविद्यालय बरपाली, छत्तीसगढ़, सत्र 2019-20, पृष्ठ संख्या-34.
9. पुरोहित गोवर्धनलाल, 'स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (1857 से 1947 तक), राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या-01.
10. जैन पुखराज, 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं राजनीति', साहित्य भवन आगरा, सत्र-1991, पृष्ठ संख्या-32.
11. पुरोहित गोवर्धन लाल, 'स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (1857 से 1947 तक), राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या-14, 15.
12. सोनकर पी.डी., संपादक, 'जय सतनाम' पत्रिका, अंक-08, अगस्त 2022, पृष्ठ संख्या-01.